वेदों की खुशबू

ओ३म्
(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 80	Year 8	Volume 6	March 2019 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual-Rs. 120- see page 6

मृत्यु से आगाह रहना किसी धार्मिक ग्रन्थ के पढ़ने से कम नहीं

महात्मा चाणक्य का कहना है---श्मशान में मृतक को देखकर, रोगी और दुखीः के पास रहने पर जो विचार मन मे पैदा होते है, वह यदि सर्वदा बने रहें, तो मनुष्य बहुत से दुष्कर्मो से बच सकता है।

जिस तरह धार्मिक ग्रन्थ का अध्यन विचारों को सात्विक बना कर हमारे कर्मो को अच्छा बनाता है इसी प्रकार यह बिल्कुल सत्य है कि यदि मनुष्य अपनी मृत्यु को ख्याल में रखता है, अर्थात इस सत्य से वाकिफ रहता है दूसरों की तरह उसने भी इस संसार सें इसी भान्ति एक दिन चले जाना है तो यह किसी धार्मिक ग्रन्थ के अध्यन से कम नहीं।

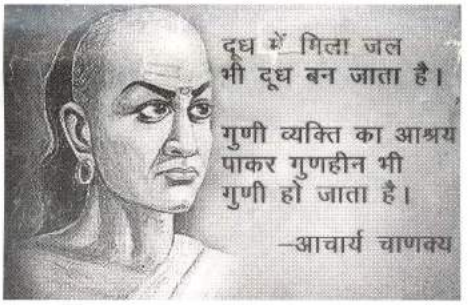

महात्मा बुद्ध के जीवन का एक सुन्दर संस्मरण है। एक विधवा औरत का लड़का बहुत उदण्ड हो गया था व उसकी बिल्कुल नहीं सुनता था। वह दुखी थी, तभी उस गांव में महात्मा बुद्ध पधारे। लोगों के कहने पर वह अपने बेटे को लेकर महात्मा बुध के पास गई व उन्हे अपनी समस्या से अवगत करवाया। महात्मा बुध बोले ------" देखो अब मेरा इसे शिक्षा देने का कोई फायदा नहीं क्योकि इस का जीवन ही अब सात दिन शेष रह गया है।" मां बेटा दोनो महात्मा बुद्ध की बात सुन कर सत्बध रह गये व बहुत दुखी हो कर व टूट कर घर चले गये।

जब छे दिन बीत गये तो महात्मा बुध उस औरत के घर गये व देखा कि घर में सन्नाटा सा छाया हुआ है और मां बेटा दोनो गुम सुम होकर बैठे हुये हैं। कुछ देर बैठने के बाद उन्होने उस औरत से पूछा------पिछले छे दिन में आपके बेटे ने उदन्डता के कितने काम किये।

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
 # 231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा
15, हनुमान रोड
नई दिल्ली-110001

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2016-2018

महात्मा बुध कें प्रश्न से हैरान वह औरत उन से बोली------" जिस व्यक्ति को पता हो कि उसकी मृत्यु इतने नजदीक है वह क्या उदन्डता के काम करेगा?"

महात्मा बुध जोर से हंसे व बोले--------" सच्चाई यह है कि मैं किसी भी व्यक्ति के भविष्य के बारे में न जानता हू और न ही बता सकता हू। मैने तो यह बात इस लिये कही थी कि अगर हम अपनीं मृत्यु का ख्याल हर समय मन मे रखे, अर्थात दूसरों कि तरह हमने भी इस संसार से इसी भान्ति एक दिन चले जाना है तो मनुष्य बहुत से दुष्कर्मो से बच सकता है।

मेरे पति शिमला में अपने समुदाय के दो बहुत सम्मानित व्यक्ति स्वर्गीय महाशय ठाकुर दास व महाशय पृथ्वी चन्द की अकसर बातें बताते हैं। इस समुदाय की संख्या उस समय पांच हजार के करीब थी जब भी समुदाय में या उन की जान पहचान में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती तो उन में से एक अवश्य दह संस्कार के लिये जाता। जब कि शमशान भूमी 6 किलो मीटर थी व उन दिनो चल कर ही जाना पड़ता था व ऐसा महीने में पांच छ बार होता था।

एक बार उन से यह पूछा गया कि वह 12 किलो मीटर चलकर भी संस्कार में क्यों जाते है जिनसे उनके घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं, उनक जबाव था-------" यह सब हम अपने फायदे के लिये करते हैं। पहला, यह हमे इस सच्चाई से आगाह रखता है कि हर एक ने इसी तरह इस संसार से जाना है। दूसरा जब हम राय बहादुर हो या राय साहब, उनको खाली हाथ जाते देखते हैं तो यह समझ रहती है कि यह धन यहीं रह जाना है इस लिये बईमानी से धन क्यों कमाऐं व किस के लिये कमायें जब कि उनका साथ भी शमशान भूमी तक ही है।

इस लिये सत्य कहा है कि मृत्यु का विचार किसी धार्मिक ग्रन्थ के पढ़ने से कम नहीं

Lighter Moments

*Saving is the best thing, epecially when your parents have done it for you.

*Marriage is a relationship in which one person is always right and the other is the husband!

*There is only one perfect child in the world and every mother has it.

*There is only one perfect wife in the world and every neighbour has it!

*Why do couples hold hands during their wedding?

It's a formality just like two boxers shaking hands before the fight begins!

*Wife: Darling today is our anniversary, what should we do?

Husband: Let us stand in silence for 2 minutes..

Child----Papa, why do they call our language the mother tongue? Father ---My child, because the father seldom gets to speak!

For, happiness, peace and good relations, try to observe these mantras

1 **This too shall pass----Always remember** even troubles have a shelf-life. बुरा समय है तो वह भी गुजर जायेगा

2 **Everything is not about you** (दूसरों के बारे में राय बनाते हुये जल्दबाजी न करें, खुले मन से सोचने की आदत डालें-- We must understand decision that others take may have been taken for other reasons unknown to us and they may have had no intention to hurt or cheat us.

3 **This is the time; this, the moment!**(अगर कुछ करना है तो यही ठीक समय है)---- Whatever you put off for the 'right time' never gets done, because there is no right time other than the one right now. Do not put off the things that are important to you.

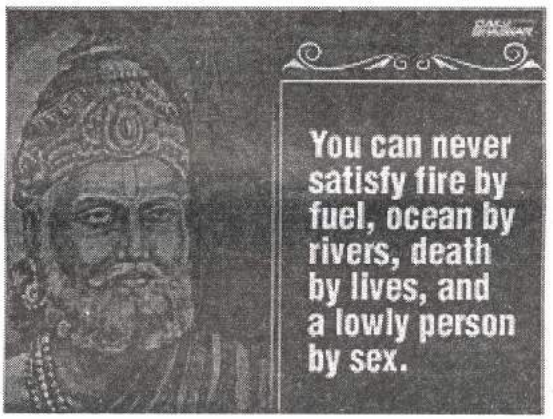

4 **This is done. Now, what next** ?(यह तो हो गया अब और क्या?)--- Never hang up your boots. Instead, soon as one goal you set yourself is over, set your sights on another one

5 **Stay honest, no matter what! (** चाहे कोई भी परिस्थती हों, इमानदारी व सच्चाई से समझौता न करें).---Honesty is a shield that is tough to pierce. Take pride in being a person of integrity. Early on, create your own code of ethics and stay honest to your principles. Honesty is indeed the best policy! You will never be left with any regrets.

6 **Kindness never went unnoticed or unpaid—(** दूसरों के प्रति दया की भावना व आपका दयालुता से भरा कार्य आप के लिये सदैव सुखकारी होगा, समय चाहे लग सकता है)Make it your mantra to treat everyone kindly and fairly. Helping others is the only way to help you on. All your kindness and large-heartedness will revisit you in some way or the other. Just believe it. If nothing, at least you live with a clear conscience and peace.

7 **Trust your instinct—(** आपकी आत्मा जो संदेश भेजती है , उसे सुने व उस पर विश्वास करें)You can have no better guide than your own instinct. It comes from a place of greater wisdom and the knowledge you have been imbibing all through life without even realizing. Quite often your best decisions are those you make instantly. When your whole being guides you towards a direction or a choice, go with it.

8 **Fulfill your potential—(** अपनी क्षमता के अनुरूप कार्य करें) Ensure that you fulfill the potential you are born with and the one you have honed in your growing up years. Do not fritter away life on inconsequential things. Make sure you have done your duty to yourself and so towards your existence – make the most of your own endowments. Understand your strengths and weaknesses. Use the former and guard against the latter.

9 **Stay balanced through highs and lows---** (जीवन के उतार चड़ाव में अपना मानसिक सुतुलन बनाकर रखें) Keep the idea of success in your sights when low, but also

remember to keep the ground within your sights when at the top. That will ensure that you stay hopeful in the leaner period and do not forget to stay grounded and modest when at the top. One will always follow the other – good times and bad times. A life well lived is when you stay balanced through it all.

10 **May be God has something better in store for me--------**(असफल होने पर याद रखें कि हो सकता है ईश्वर ने कुछ इस से अच्छा आप के लिये सोच रखा है) Never get disheartened if your efforts do not succeed. Have full faith in God. He can have better/different plans for you.

11 Refuse to allow yourself to have low expectations about what you are capable of creating (अपने बारे में अपनी राय छोटी न होने दे।)

12 Never forget the ones who did some good to you, including God, parents ,kin and others. To be ungrateful is sin.(जिसने आप के लिये कुछ अच्छा किया हो उसे कभी न भूलें, क्योंकि कृतंघ्नता पाप है)

13 Morality and strength of character (मानविय मूल्यों का पालन आपके चरित्र को अच्छा बनाता है)----We cannot be at peace or experience emotional freedom without a clear conscience. A high sense of moral integrity is important for a healthy inner life. Without strength of character, we can easily compromise on 'minor' infractions on integrity.

14 Never choose convenience over righteousness. Ends never justify the means. Guilt results in anxiety, irritability and low self-esteem. Immoral conduct in business or personal life corrupts and weakens us. Choosing to do the right thing strengthens our inner being.

15 Live your life on your own terms अपने आदर्शों और सिद्धांतों का पालन करते हुये अपना जीवन जीये।) We carry enormous emotional baggage when we are trying to live a life that we believe others expect us to.

16 To live a stress free life, do not compare yourself with others मानसिक दवाव के बिना जीवन जीना है तो अपनी तुलना दूसरों से करना बन्द कर दें)

17 Do your best on what's in your control and do not worry about what's not in your control; जो आप के बस में है उसी पर नियन्त्रण करें)

18 Rise above greed लोभ से उपर उठें। संसार की हर वस्तु को पाने का प्रयत्न न करें। सब कुछ आपके लिये नहीं। वस्तु को देंखे और आनन्द का भाव महसूस करें पर हर चीज मेरी हो मैं उसका स्वामी बनू यह सोच न हो

19 If some thing goes wrong, first try to find out where you faultered कुछ खराब घटना हो तो अपनी गलती को पहले देंखें दूसरी की बाद में ।

20 No body is complete and it applies to you also अपूर्णता को स्वीकार करना सीखें। हम हर कार्य में सफल नहीं हो सकते और न हीं हर क्षेत्र में बेहतरीन। असफलताओं को स्वीकार करें।

21 "Never start with diffidence. Always start with confidence.

Humanity first, nationalism next

NEELA SOOD

Vedas ask man to consider entire universe as his family in the spirit of 'Vasudhav katumbkam'. Again, Vedas speak of peace and happiness in entire Universe which gets manifested from this Hymn of Yajurveda , commonly recited in Hindu temples---Om dyauh Shanirantariksham, shanti prithvi, shati rapaha---------Oh God! We pray for peace in entire Universe, in water, in sky, in air, in our speech, ---------and in every nook and corner of this globe.

Atharva veda says "Life is life with others. Man's glory lies in being a member of entire Universe."Another hymn from Yajurveda enjoins the humans to---'Behave with others as you would with yourself' look upon all the living beings as your bosom friends, for all are the children of same God'. This is all crux of humanity and all religions in the world agree on this.

While God created entire Universe, man carved out nations & states out of it and these are the manifestation of his ego, greed and propensity to possess more and more which rightly belong to God in the spirit of Ishavasymidam , --every creation in this world belongs to God given to man for his use and enjoyment.

In the face of this, can nationalism which is nothing but to put one's nation before everything else supersede humanity. If nationalism was above humanity, there would not have been the birth of an organization like Red Cross and United Nations (UN). We would not have Geneva Convention which binds every nation to protect wounded and sick on battlefield, even if he is from the enemy force.

We would not have seen likes of Bhai Kanhaiya who would serve water to wounded soldiers without any discrimination between the Guru's Sikh soldiers and the Mughal army soldiers. When the Sikh soldiers complained to Guru Gobind Singh ji about Kanhaiya's unusual conduct, his reply was "I see no Mughal or Sikh on the battlefield. I only see all human beings. They all have same God's spirit. Guru ji, have you not taught us to treat all humans as the same." Guru Gobind Singh ji went inside and brought medical Balm and said " Kanhaiya ji, From now on, You should also put this balm on who need it"

Without any doubt, all scriptures supplicate for keeping humanity above nationalism. Humanity is God created, while nationalism is man created. Nationalism protects geographical boundaries whereas Humanity protects the mankind, the soul of Nation, without which it will be a barren land. Nothing manifests it better than the story of Japan's two cities Hiroshima and Nagasaki.

Nationalism is not bad provided it is not exclusive but is all inclusive. It is not for nothing that Ravinder nath Tagore had referred to nationalism as great menace. He went on to say, " Nationalism is at the bottom of most of the present day troubles and conflicts."

Therefore, the right slogan has to be Humanity first, next nationalism.

हमें हर हाल में गलत बीज बीजने बंद करने होंगे

सीताराम गुप्ता

पंजाबी भाशा के रचनाकार डॉ0 श्यामसुंदर दीप्ति की एक लघुकथा बीज पढ़ रहा था। कश्मीर सिंह अपने दोस्त सुरजन सिंह के साथ अपने बेटे दिलदार का, जिसकी एक अच्छे सरकारी पद पर नियुक्ति हुई है और जो अपने कॉलेज का बैस्ट एथलीट रहा है, मेडिकल करवाने सिविल सर्जन के दफ्तर पहुंचता है। जांच के बाद डॉक्टर ने बताया कि दिलदार का ब्लड प्रैशर ज्यादा है। इस बात पर कश्मीर सिंह को गुस्सा आ जाता है। इस पर उसका दोस्त सुरजन सिंह कहता है, " चल छोड़। ये इस तरह ही करते हैं। पांच सौ रुपए मांगता होगा और क्या? मार मुंह पर।" सुरजन सिंह के ये कहने पर कश्मीर सिंह कहता है, "पांच–चार सौ की बात नहीं सुरजन मियां। बात यह है कि इसने दिलदार के दिल में बीज गलत बीज दिया है और कुछ नहीं।" लघुकथा में कश्मीर सिंह का कथन बहुत महत्त्वपूर्ण है। आज जिधर नजर डालिए गलत बीज बीजे जाते मिल जाएंगे।

ये गलत बीज ही ईमानदारी और नैतिकता की राह में सबसे बड़ी रुकावट हैं। ये गलत बीज ही बढ़ते हुए भ्रश्टाचार का प्रमुख कारण हैं। जब हमारे साथ बार–बार ऐसा होता है तो मन में यही खयाल आता है कि क्यों न हम भी ऐसा ही करें? अधिकांश युवक जब अपने कार्यक्षेत्र में पदार्पण करते हैं तो उनके मन में अपने कार्य करने के क्षेत्र में अच्छे से अच्छा करने का उत्साह होता है। साथ ही अनेक युवक ईमानदारी से अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के साथ–साथ हर जगह व्याप्त भ्रश्टाचार मिटाने के संकल्प के साथ नौकरी अथवा सेवा के क्षेत्र में आते हैं लेकिन उपरोक्त गलत बीजों के बीजे जाने के कारण उनका उत्साह व संकल्प धरे के धरे रह जाते हैं। अंततोगत्वा वे भी गलत बीज़ बीजने के काम में लग जाते हैं।

शिक्षा का मनुश्य के जीबन में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस की शुरुआत भी प्रायः गलत बीज बीजने से होती है। सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद अधिकांश अच्छे स्कूलों में मोटे डोनेशन के बिना दाखिला नहीं मिलता। यही कारण है कि हम अपने बच्चों को एक अच्छा इंसान बनने की बजाय एक बड़ा आदमी बनाने को विवश हैं। और बड़ा आदमी बनाने के लिए चाहे जो करना पड़े। चाहे जैसे बीज बीजने पड़ें। लेकिन ये वास्तविकता है कि हर बच्चे को पता होता है कि उसके दाखिले के लिए कितनी रिश्वत दी गई। स्कूलों में किस तरह से अभिभावकों और शिक्षकों से चीटिंग की जाती है। शिक्षक भी ईमानदारी से पढ़ाना चाहते हैं लेकिन जब उनसे चालीस हजार पर दस्तखत करवाकर मात्र बारह–पंद्रह हजार रुपए उनकी हथेली पर रख दिए जाते हैं तो इसका किसी पर भी अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

डॉक्टरी जैसे सम्मानित पेशे का व्यक्ति भी जब रिश्वत लेने को विवश हो तो ये एक गंभीर बात है लेकिन इसके मूल में गलत बीज बीजे जाने का ही असर है। बेशक डॉक्टरी की पढ़ाई बहुत अधिक श्रमसाध्य व व्ययसाध्य है और निजी मेडिकल कॉलेजों में प्रायः मोटा डोनेशन देने पर ही प्रवेश मिलता है लेकिन इसका ये अर्थ तो नहीं कि एक डॉक्टर गलत तरीकों से अपने मरीजों से पैसे ऐंठे। सरकारी अस्पतालों में आज भी अनेक ऐसे डॉक्टर हैं जो निस्स्वार्थ भाव से मरीजों का उपचार करते हैं। कई प्राइवेट डॉक्टर भी बहुत कम या नाममात्र की फ़ीस लेकर रोगियों का उपचार करते हैं। तो ऐसे डॉक्टर बाकी डॉक्टरों के रोल मॉडल क्यों नहीं बनते? एक डॉक्टर द्वारा ईमानदारी से काम करने पर भी उचित आय और संतुश्टि मिलना मुश्किल नहीं।

आज जहां नजर डालिए गलत बीज ही बीजे जाते दिखलाई पड़ेंगे। तो क्या इस कारण से बाकी लोगों को अनैतिक होने अथवा भ्रश्ट आचरण करने की छूट दे दी जाए? कदापि नहीं। माना कि हमारे मार्ग में कुछ लोगों ने गलत बीज बीज दिए लेकिन जिन लोगों ने हमारे मार्ग में सही बीज बीजे हमें वे क्यों नहीं दिखलाई पड़ते? हम उनकी तरह सिर्फ अच्छे बीज क्यों नहीं बीजते? आचार्य हजारी

प्रसाद द्विवेदी अपने एक निबंध 'क्या निराश हुआ जाए?' में एक स्थान पर लिखते हैं, " एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए ग़लती से दस के बजाय सौ रुपये का नोट दे दिया और मैं जल्दी–जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकंड क्लास में डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिए और बोला, " यह बहुत बड़ी ग़लती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।" उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।"

उपरोक्त घटना से कई चीज़ें स्पष्ट होती हैं जैसे हर दौर में अच्छे, ईमानदार और विनम्र व्यक्ति मौजूद होते हैं तथा जीवन में जब भी हम अच्छाई, ईमानदारी और विनम्रता आदि उदात्त गुणों का निर्वाह करते हैं तो इससे न केवल हमारे चेहरे पर संतुष्टि का भाव झलकने लगता है अपितु हमारे व्यक्तित्व में भी इसकी गरिमा दिखलाई पड़ने लगती है। अपने बीते हुए दिनों और घटनाओं पर थोड़ा दृष्टिपात कीजिए। आपने भी अपने जीवन में अवश्य ही अनेकानेक बार ऐसी ही अच्छाई, ईमानदारी, कर्त्तव्यपालन और विनम्रता आदि गुणों का परिचय दिया होगा। उस समय आपकी मनोदशा कैसी थी और उस मनोदशा का आपके स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ा था ज़रा याद करने की कोशिश कीजिए। जब भी हम ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं, किसी की मदद करते हैं अथवा अन्य कोई अच्छा कार्य करते हैं तो इससे न केवल हमारे चेहरे पर संतुष्टि का भाव झलकने लगता है और हमारा व्यक्तित्व गरिमापूर्ण दिखलाई पड़ने लगता है अपितु हमारे स्वास्थ्य में भी सकारात्मक परिवर्तन हो जाता है।

ईमानदारी मनुष्य का एक सर्वोत्तम गुण है। ईमानदारी का मनुष्य के व्यक्तित्व पर न केवल सकारात्मक प्रभाव पड़ता है अपितु ईमानदार मनुष्य का स्वास्थ्य भी बेईमान लोगों के मुक़ाबले में बहुत अच्छा पाया जाता है। जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का पालन करता है, किसी की सहायता करता है अथवा निस्स्वार्थ सेवा करता है उसे अत्यंत संतुष्टि और आनंद की प्राप्ति होती है। ईमानदारी की अवस्था में भी अत्यंत संतुष्टि और आनंद की प्राप्ति होती है। संतुष्टि और आनंद की अवस्था में व्यक्ति तनावमुक्त होकर स्वस्थ हो जाता है। अतः ईमानदारी की अवस्था मनुष्य के अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत उपयोगी होती है। बेईमान व्यक्ति के चेहरे से जहाँ हमेशा धूर्तता टपकती रहती है वहीं ईमानदार व्यक्ति का चेहरा सदैव आत्मविश्वास की गरिमा से दमकता रहता है व प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण सबके आकर्शण का केंद्र बन जाता है।

यह वास्तविकता है कि आज बहुत से लोग केवल उन क्षेत्रों में ही नौकरी करना चाहते हैं जहां ऊपर की कमाई भी हो और मोटी कमाई हो लेकिन मनुश्य और समाज के संतुलित विकास के लिए भ्रश्टाचार के इस दुश्चक्र को तोड़ना अनिवार्य है। इसका एक ही उपाय है और वो ये है कि हमारे मार्ग में जो गलत बीज बीजे गए हम उनको भूलकर केवल सही बीजे गए बीजों को याद रखें और केवल उनका अनुकरण करें।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा, दिल्ली–110034
फोन नं. 09555622323

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

CONDUCT OF A MAN TELLS A LOT ABOUT HIM

Sudha Murthy

It was sometime in April 1974. I was looking forward to going abroad to complete a doctorate in computer science.

One day, I saw an advertisement which stated that the company required young, bright engineers, hardworking and with an excellent academic background, etc. At the bottom was a small line: "Lady candidates need not apply." I read it and was very upset. For the first time in my life I was up against gender discrimination.

Though I was not keen on taking up the job, I saw it as a challenge. I had done extremely well in academics, better than most of my male peers.

Little did I know then that in real life academic excellence is not enough to be successful.

After reading the notice I went fuming to my room. I decided to inform the topmost person in Telco's management about the injustice the company was perpetrating. I got a postcard and started to write, but there was a problem: I did not know who headed Telco. I thought it must be one of the Tatas. I knew JRD Tata was the head of the Tata Group; I had seen his pictures in newspapers (actually, Sumant Moolgaokar was the company's chairman then). I took the card, addressed it to JRD and started writing. To this day I remember clearly what I wrote.

I posted the letter and forgot about it. Less than 10 days later, I received a telegram stating that I had to appear for an interview at Telco's Pune facility at the company's expense. I was taken aback by the telegram.

It was my first visit to Pune. As directed, I went to Telco's Pimpri office for the interview. There were six people on the panel and I realised then that this was serious business.

"This is the girl who wrote to JRD," I heard somebody whisper as soon as I entered the room. By then I knew for sure that I would not get the job. The realisation abolished all fear from my mind, so I was rather cool while the interview was being conducted. The panel asked me technical questions and I answered all of them.

Then an elderly gentleman with an affectionate voice told me, "Do you know why we said lady candidates need not apply? The reason is that we have never employed any ladies on the shop floor. This is not a co-ed college; this is a factory. When it comes to academics, you are a first ranker throughout. We appreciate that, but people like you should work in research laboratories."

I was a young girl from small-town Hubli. My world had been a limited place. I did not know the ways of large corporate houses and their difficulties, so I answered, "But you must start somewhere, otherwise no woman will ever be able to work in your factories."

Finally, after a long interview, I was told I had been successful. So this was what the future had in store for me. Never had I thought I would take up a job in Pune. I met a shy young man from Karnataka there, we became good friends and we got married.

It was only after joining Telco that I realized who JRD was: the uncrowned king of Indian industry. Now I was scared, but I did not get to meet him till I was transferred to Bombay. One day I had to show some reports to Mr Moolgaokar, our chairman, who we all knew as SM. I was in his office on the first floor of Bombay House (the Tata headquarters) when, suddenly JRD walked in. That was the first time I saw "appro JRD". Appro means "our" in Gujarati. This was the affectionate term by which people at Bombay House called him.

I was feeling very nervous, remembering my postcard episode. SM introduced me nicely, "Jeh (that's what his close associates called him), this young woman is an engineer and that too a postgraduate.

She is the first woman to work on the Telco shop floor." JRD looked at me. I was praying he would n

ask me any questions about my interview (or the postcard that preceded it).

Thankfully, he didn't. Instead, he remarked. "It is nice that girls are getting into engineering in our country. By the way, what is your name?" "When I joined Telco I was Sudha Kulkarni, Sir," I replied. "Now I am Sudha Murthy." He smiled and started a discussion with SM. As for me, I almost ran out of the room.

After that I used to see JRD on and off. He was the Tata Group chairman and I was merely an engineer. There was nothing that we had in common. I was in awe of him.

One day I was waiting for Murthy, my husband, to pick me up after office hours. To my surprise I saw JRD standing next to me. I did not know how to react. Yet again I started worrying about that postcard. Looking back, I realise JRD had forgotten about it. It must have been a small incident for him, but not so for me.

"Young lady, why are you here?" he asked. "Office time is over." I said, "Sir, I'm waiting for my husband to come and pick me up." JRD said, "It is getting dark and there's no one in the corridor.

I'll wait with you till your husband comes." I was quite used to waiting for Murthy, but having JRD waiting alongside made me extremely uncomfortable.

I was nervous. Out of the corner of my eye I looked at him. He wore a simple white pant and shirt. He was old, yet his face was glowing. There wasn't any air of superiority about him. I was thinking, "Look at this person. He is a chairman, a well-respected man in our country and he is waiting for the sake of an ordinary employee."

Then I saw Murthy and I rushed out. JRD called and said, "Young lady, tell your husband never to make his wife wait again." In 1982 I had to resign from my job at Telco. I was reluctant to go, but I really did not have a choice. I was coming down the steps of Bombay House after wrapping up my final settlement when I saw JRD coming up. He was absorbed in thought. I wanted to say goodbye to him, so I stopped. He saw me and paused.

Gently, he said, "So what are you doing, Mrs Kulkarni?" (That was the way he always addressed me.) "Sir, I am leaving Telco."

"Where are you going?" he asked. "Pune, Sir. My husband is starting a company called Infosys and I'm shifting to Pune."

"Oh! And what will you do when you are successful."

"Sir, I don't know whether we will be successful."

"Never start with diffidence," he advised me. "Always start with confidence. When you are successful you must give back to society. Society gives us so much; we must reciprocate. I wish you all the best."

I consider JRD a great man because, despite being an extremely busy person, he valued one postcard written by a young girl seeking justice. He must have received thousands of letters everyday. He could have thrown mine away, but he didn't do that. He respected the intentions of that unknown girl, who had neither influence nor money, and gave her an opportunity in his company. He did not merely give her a job; he changed her life and mindset forever. Close to 50 per cent of the students in today's engineering colleges are girls. And there are women on the shop floor in many industry segments. I see these changes and I think of JRD. If at all time stops and asks me what I want from life, I would say I wish JRD were alive today to see how the company we started has grown. He would have enjoyed it wholeheartedly.

I always looked up to JRD. I saw him as a role model for his simplicity, his generosity, his kindness and the care he took of his employees. Those blue eyes always reminded me of the sky; they had the same vastness and magnificence.

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172—2662870, 9217970381

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डबार, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH, GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL & All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sector 20-D, Chandigarh

ईश्वर एक परन्तु नाम असंख्य, ऐसा क्यु?

डॉ विवेक आर्य

ईश्वर के असंख्य नाम हैं। ईश्वर के अनेक नाम इसलिए हैं क्यूंकि ईश्वर के अनेक गुण हैं। ईश्वर के असंख्य गुण होने के कारण भी ईश्वर के असंख्य नाम सिद्ध होते हैं। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने अनेक नामों की व्याख्या की हैं। जैसे– –जिसको विविध विज्ञान अर्थात् शब्द, अर्थ, सम्बन्ध प्रयोग का ज्ञान यथावत् होवे, इससे उस परमेश्वर का नाम 'सरस्वती' है। चर और अचर रूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम 'विष्णु' है। जो सम्पूर्ण जगत् को रच के बढ़ाता है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'ब्रह्मा' है। –जो कल्याणस्वरूप और कल्याण का करने हारा है, इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'शिव' है। अतः अनेक ईश्वर होने और उनके आपस में लड़ने की बात केवल एक मिथक सिद्ध होती है। जब ईश्वर एक ही है, पर अनेक नाम वाला है, तो यह कोरी कल्पना ही सिद्ध हुई। ईश्वर के तीनों लिंगों में नाम हैं। एक ही ईश्वर के पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग तीनों लिंगों में नाम हैं। जब सभी नाम एक ही ईश्वर के हैं तो ब्रह्मा, विष्णु और महेश जैसे नामों को पितृ सत्तात्मक और सरस्वती, लक्ष्मी, देवी आदि को मातृ सत्तात्मक के रूप में विभाजित करना केवल मानसिक दिवालियापन है।

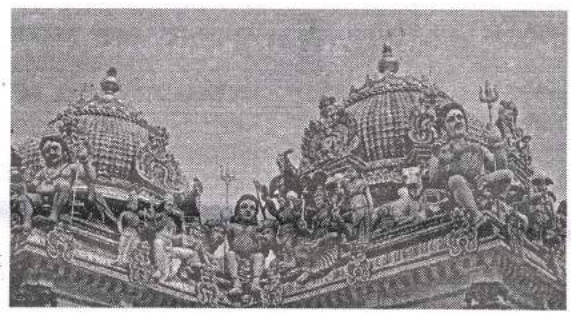

ईश्वर की परिभाषा को जानने से ऐसी सभी भ्रांतियों का निवारण सरलता से हो जाता है। ईश्वर– जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो एक अद्वितीय, सर्वशक्तिमान निराकार सर्वत्र व्यापक अनादि और अनंत आदि सत्यगुण वाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनंदी, शुद्ध न्यायकारी, दयालु और अजन्मा आदि है, जिसका कर्म जगत की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सर्वजीवों को पाप, पुण्य के फल ठीक–ठीक पहुँचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं। –स्वामी दयानन्द

यह लेख यही दर्शाता है कि साम्यवादी मानसिकता ईश्वर, ईश्वर की परिभाषा, ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव आदि किसी भी विषय पर कुछ नहीं जानते। ये केवल कचरा फैलाना जानते हैं, क्यूंकि इनका उद्देश्य मार्गदर्शन करना नहीं अपितु भटकाना है। इसलिए इनसे सावधान रहें और जहाँ भी ये मिलें इनके बौद्धिक प्रदुषण से सबको सचेत करते रहें।

वह परमेश्वर एक है, एक है, एक ही है उसके मुकाबले में कोई दूसरा , तीसरा, चौथा परमेश्वर नहीं है, पांचवां, छठा , सातवाँ नहीं है, आठवां, नौवां, दसवां नहीं है, वही एक परमेश्वर चेतन–अचेतन सबको देख रहा है 1/4अथर्ववेद 16/4/16–201/2।

विक्रम भट द्वारा धर्म के बारे में की गई टिपन्नी धर्म के ठीक स्वरुप को बताती है

भारतेन्दु सूद

कुछ समय पहले मुझे एक फिल्म निर्माता विक्रम भट का लेख पढ़ने का मौका मिला। पढ़ कर एक आशा की किरण मिली कि शायद वह दिन अवश्य आयेगा जब भारत का समाज भी सदियों से हमारे समाज को खोखला करते आये अन्ध विश्वासों, कर्मकाण्डो व पाखण्डों से स्वतन्त्र हो जायेगा और तब यह देश भी न केवल उन्नति कि बुलन्दियों को छूएगा बल्कि लोग इस देश में भी रहना पसन्द करेंगे।

विक्रम भट लिखते हैं कि उनके द्वारा बनाई गई फिल्में सफल नहीं हो रही थी। चिन्तित मां ने एक ज्योतषी को घर बुलाया। ज्योतषी ने बताया कि मुझ पर शनि की दिशा थी और शनि मेरे लिये समस्या बना हुआ था। इस का समाधान यही है कि मैं हर शनिवार मन्दिर जा कर भगवान को तेल व काले उड़द भेंट करूं। मैने हां कर दी यह सोचकर कि यह थोड़ा सा करने से अगर समस्या का समाधान होता है तो इस से अच्छी और कोई बात नहीं।

शनिवार को मैं मन्दिर में पहुंच गया। बहुत श्रद्धा से तेल व काले उड़द भेंट किये। फिर यह सोच कर कि भगवान का पूरा आर्शीवाद मुझे मिल जाये, मैने श्रद्धा भाव से भगवान की मूर्ती को छूने के लिये हाथ बढ़ाया। जैसे ही पुजारी ने देखा, उसने बहुत क्रोध के साथ मेरा हाथ परे किया व बोला—— मूर्ति को हाथ लगाना मना है। मुझे उसके व्यवहार ने क्रोधित कर दिया व मैं उससे बोला——जब मैं भगवान को छू ही नहीं सकता तो मुझे अन्दर ही क्यों आने दिया व भेंट क्यों ली?

काफी गर्मागर्मी हो गई, मन्दिर में आये दूसरे लोग तो अन्ध श्रद्धालु थे उनकी सहानुभूती तो पण्डित के साथ होना स्वभाविक थी। खैर मैने अपनी बात कहकर ही दम लिया—— जिस भगवान को दूसरे लोग चलाते हों who is regulated by others वह मेरा भगवान नही हो सकता।

यही नहीं, और सोचा व आसपास देखा तो लगा कि भगवान को तो लोगों ने टूथ पेस्ट व शैम्पू जैसे कोई commodity बना दिया है। जैसे उत्पादक कम्पनियां अपने टूथ पेस्ट व शैम्पू को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिये नये से नया तारीका ढूंढती है वैसे ही ये, अपने आप को भगवान का ऐजैन्ट कहने वाले, अपने अपने भगवान को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिये marketing की नई से नई तरकीब अपना रहें हैं। जरा सोचिये उस भगवान की हालत जिसे हम सर्वव्यापक,सर्वन्तरयामी, सर्वशक्तिमान, सव का पालनहार व सृष्टि का रचयिता कहते है। उसके भक्तों ने उसे पकड़ा, उठाया व मन्दिर में डाल दिया व अपनी इच्छा के अनुसार उस सर्वशक्तिमान को चलाते हैं।

एक मित्र से बात की तो उसने कहा———भारत में भगवान के लिये marketing करने की ज़रूरत ही नहीं। भगवान बनाओ, अच्छे चमकते कपड़े पहनाओ, एक कमरे में रख दो और बाहर लिख दो मन्दिर, लोग खुद ही भागे– भागे आयेंगे। हैरान था, जिसे हम कहते हैं' दुनिया बनाने वाला' उसे बनाना इतना आसान है।

अब दक्षिण भारत की बात ले लो। भगवान के दर्शन करने के लिये टिकट हैं। अगर आपकी जेब में बहुत पैसा है तो मोटी रकम देकर दर्शन जल्दी हो जायेगें। अगर पैसे नही, तो हो सकता है कई घंटे लाईन में लगें रहे। और अगर आप बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं तब तो आप मूर्ती के पास भी जा सकते हैं। मैं पूरी तरह आश्वस्त हूं कि जिस भगवान के पास पहुंचने के लिये पैसा चाहिये हो और जो अपने भक्तों में ही भेद भाव रखता हो वह मेरा भगवान नहीं हो सकता।

एक बच्चा विद्यालय से आता है व जिस सोसायटी में वह रहता है वहां का सिक्योरटी गार्ड उस बच्चे को कहता है कि अभी तुम अपनी मां से नहीं मिल सकते, बैठ जाओ मैं तुम्हें जब कहूंगा तभी तुम जाओगे। जरा सोचिये उस बच्चे व उस की मां पर क्या बीतेगी। वे दोनो गुस्से से पागल हो कर उस सिक्योरटी गार्ड से कहेगें कि तू हमारे बीच में दखल देने वाला कौन होता है। यही बात लागू होती है सच्चे भगवान व सच्चे भक्त पर। कहने का अर्थ है कि यह जितने भी पुजारी, पुरोहित हैं उस सिक्योरटी गार्ड की तरह ही हैं। इनको मानोगे तो कभी अपने भगवान तक नहीं पहुंच पाओगे।

मेरा मानना है कि जो भगवान दिन में सो जाये, व्यक्ति द्वारा दिये गये प्रसााद का व दूध फल आदि का भोग करता हो, जिसके बारे में यह कहा जाये कि वह किसी खास भाषा मे ही प्रार्थना को सुनता है, जिस तक प्रार्थना पहुंचाने के लिये बीच में ऐजेन्ट की आवश्यकता हो, जिस प्रभु के बारे में कहा जाये कि वह किन्ही खास स्थानों पर ही वास करता है वह भगवान नहीं।

अभी कुछ दिन पहले ही एक और अभिनेता अक्षय कुमार ने कहा था जब ईश्वर सब जगह है तो उस के दर्शन करने लिये लाखों रूपया खर्च कर किसी खास जगह पर क्यों जाया जाए।

आज हम इन कुछ बातों को जब सुन रहें हैं या पढ़ रहें हैं तो ऐसा लगता है लोगों को ठीक ज्ञान हो रहा है परन्तु देव दयाानन्द ने तो यह सब 140 वर्ष पहले कह कर सब को सोचने पर मजबूर कर दिया था। जो शिव अपनी रक्षा एक चूहे से नहीं कर सकता वह सच्चा शिव नहीं हो सकता कहने वाला मूलशंकर ही, वेदो का खोज निकालने वाला दयानन्द वना और उसने लाखों की सोच को बदल कर उन्हे पाखण्ड, अन्धविश्वासों, कर्मकाण्डों व आडम्बरों से छुटकारा दिलवाया।

पर सोचने वाली बात यह है कि स्वतन्त्रता के बाद उसी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज मे यह परिवर्तन की लहर रूक क्यों गई। इसका उत्तर है–– आर्यसमाज स्वयं ही कर्मकाण्ड के सिवाय कुछ नहीं रह गया। एक ही काम रह गया वह है हवन। आपको हैरानगी होगी कि 90 प्रतिशत आर्य समाजों में सारे सप्ताह में सिर्फ एक आधे घंटे का हवन होता है उस में भी श्रद्धा भाव न के बराबर होती है बस खानापुर्ती होती है किसी तरह समय पूरा हो। जिन समाजों में दैनिक हवन होता है वह भी कर्मकाण्ड के सिवाय कुछ नहीं। देव दयाननद ने तो पंच यज्ञ, जिसमें अग्निहोत्र भी एक है, मनुष्य के अपने जीवन को परोपकारमयी बनाने के लिये बनाये थे, न की एक आय का साधन बनाने के लिये, जो कि आज आर्यसमाजों व पुरोहितों ने बना लिया है। जिन को आप वैदिक प्रवक्ता कह कर बुलाते हैं वह एक मन्त्र का अर्थ करके अपना समय निकाल देते है। सत्य यह है कि उनके पास आज की पीड़ी के लिये, समय के साथ सार्थक, बताने के लिये कुछ नही। न ही उनके पास योग्यता है। उनके अपने बच्चे भी उनको नहीं सुनते।

स्वतन्त्रता से पहले आर्य समाज की विचारधारा इसलिये फैली क्योकि आर्य समाज ने समाज की समस्याओं के साथ अपने आप को जोड़ा। जातपात, छूआछूत, अन्धविश्वास, पाखण्डो, आडम्बरों, मठ मन्दिरों मे गुरूडम, धर्म के नाम पर पशुओ की बलि, स्त्रीयों के साथ असमानता का व्यवहार करते हुये उन्हे शिक्षा से दूर रखना व लड़की को जन्म से पहले ही स्त्री के गर्भ में मार देना, सति प्रथा जैसी समाजिक बुराईयां के विरूद्ध ऐसी आवाज़ उठाई कि लोगों इस की और झुकते चले गये। देश को आजादी दिलवाने के लिये राष्ट्रवाद को मुख्य स्थान दिया।

आज भारतीय समाज में समस्याएं उस से भी अधिक है। अन्धविश्वास, पाखण्डो, आडम्बरो का बोलबाला पहले से कहीं अधिक है। समाजिक असमानता पहले से कहीं अधिक होती जा रही है। स्त्री उत्पीड़न चरम सीमा पर है। नई पीड़ी चाहे सफलता के नये कीर्तीमान बना रही है परन्तु जीवन जीने की कला से अनभिज्ञ है व जीवन में संतुलन न होने के कारण अपने आप को परेशान व रास्ते से भटका हुआ पा रही है ऐसे में आर्य समाज जिसमें की दिशा देने की क्षमता थी उसकी पहचान हवन व फटाफट शादीयां करने वाली संस्था के रूप में बन गई है। जो बाते विक्रम भट ने की, मै नहीं समझता आज का आर्य समाज का उपदेशक बोलने का साहस करता है। कारण कई हैं–– उसके अपने परिवार का वातावरण भी अन्धविश्वास व पाखण्डों से ग्रस्त है, उसको यह भी डर सताता है कि उसके R.S.S व विश्व हिन्दु परिषद के मित्र बुरा मान जायेगें, तीसरा वह खुद भी डावांडोल है। मोका व पैसे मिले तो ज्योतषी का काम भी करते हैं। ऐसे में आर्य समाज को फिर से ढूंढने की आवश्यकता है। ऐसे समाज की जो कर्मकाण्ड व पुरोहितों से मुक्त, वैदिक मूल्य जिसमे खासकर एक निराकार, अजन्मा ईश्वर को मानना, अन्धविश्वासों व भगवान के ऐजन्ट कहलवाने वालो से दूर रहना, शिक्षा का प्रसार व शारिरिक व आत्मिक सफाई को पांच यम–– सत्य, अहिंसा, चोरी न करना, ब्रहम्चर्य, उतना ही पास रखना जितना चाहिये अर्थात जरूरत ये अधिक संग्रह न करना व पांच नियम–– शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर को सर्मपण को जीवन में स्थान देना जिसका उदेश्य हों।

"Poll promises are rituals, best ignored"

Bhartendu Sood

Ever since the bells for 17th Lok sabha elections started ringing, I can hear many people saying different things about the promises made by Mr Narender Modi, during the 2014 election campaign. A section of people says----'what about the Rs 15 lakh you promised to be put in our account by transferring the unaccounted money slashed in the foreign accounts by our super rich. Then others especially the unemployed youth and their peeved parents' question, 'where are the jobs you had promised?' like this there are other promises which in the opinion of people were not kept by Mr Modi.

Mr Modi on his part, very wisely, neither rebuts nor does he give any explanation as he believes that offence is the best defense, best manifested by his this quote-'*hum ghar main ghus kar marenge* ' and therefore in 2019 he came out with another set of promises, having no relation with past promises.

Then Mr Rahul Gandhi, other top contender for the PM's post did not want the field to be kept open for Mr Modi. He made another very enamoring and vote catching promise of assuring Rs 6000 per month income to the 20% poorest of the country. Likewise all parties and politicians have made promises which if critically examined can leave one flabbergasted, most being unrealistic and farfetched.

During my service career I was told by a business tycoon, 'Wise people never make promises but if they make then they keep.' I think he forgot to mention that it did not apply to politicians as they can't do business without making promises as one can't trade on bourses without speculating. But those who continue to be idealistic even after 70 years of our becoming democracy believe that poll promises must be legally binding. Indeed this has become an issue. While politicians can't do business without making promises, the people on their part want accountability so that politicians do not get away easily in the event of their failing to keep these. While thinking all this, I read about a politician who seems to have a solution. He is a comedian turned politician, Ukraine President elect Karina Zelensky who won this year's Presidential elections with 73% popular votes but quite surprisingly avoided making any promise in his manifesto. His campaign slogan was " No promise, No enquiries, No apologies" As I was sharing my views with my better half, she had a big grin, "People may feel let down by such promises of our politicians but at least I am not. It is their mistake if they choose to ignore this old adage- You can't trust a promise someone makes while he's drunk, in love, hungry, running for office or made during '*Seven pheras*' in the Hindu marriage called *Sptavadi*." People like you are questioning Mr Modi but I ask you how many promises that you had made before marriage, during marriage ceremony before the sacred fire and during the honeymoon, were kept by you" Message was loud and clear I am convinced poll promises are rituals best ignored.

आर्यसमाज और दयानन्द के प्रति इतिहासकारों का संकुचित नजरिया

यह कितने लोग जानते हैं कि आर्यसमाज और परोपकारिणी सभा की स्थापना के पीछे महर्षि दयानन्द का मकसद सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान, धर्म, अध्यात्म, समाज, संस्कृति, दर्शन और मानवीय मूल्यों को समाज सुधार के लिए उपयोग करना और उनकी स्थापना के लिए निश्पक्ष प्रयास करना जिससे एक आंदोलन खड़ा हो सके, जिससे समाज से शोषण, जुल्म, क्रूरता, छूआछूत, गंदी प्रथाएं, कुप्रवृत्तियाँ, जटिलताएँ, अज्ञानता, अविद्या और चारित्रिक पतन को बचाया जा सके।

जिस ढंग से इतिहासकारों और लेखकों ने दयांनद को समझा, वह दृश्टिकोण ही पक्षपातपूर्ण और अज्ञानता पर आधारित रहा है। यही वजह है, दयानन्द को महज एक हिंदू समाज सुधारक के रूप में ही दुनिया के सामने प्रस्तुत किया गया, जब कि उन्होंने इंसान द्वारा बनाए गए जितने भी मत मतांतर, सम्प्रदाय, जाति, वर्ण, वर्ग, विशय और शिक्षा को सुधार कर उसे सर्वमान्य बनाकर मानवहित में आगे बढ़ाना था।

ज्यादातर इतिहासकारों ने दयानंद को साम्प्रदायिक व्यक्ति या पुराणपंथी के रूप में देखा, जबकि दयानन्द का कार्य पुरातन या सनातन और नवीन का संतुलन करके तत्कालीन समाज को उसके सुधारात्मक हित में पेश करने के लिए एक सर्वमान्य सहमति तैयार करना था। विडम्बना यह है कि दयानन्द ने जिस वेद को सभी ज्ञान–विज्ञानों और दर्शनों का आधार बताया उसी वेद में कुछ मार्क्सवादी विचारधारा के इतिहासकार और लेखकों ने ही नहीं, ब्राह्मणवादी(पौराणिक) मानसिकता के पोंगापंथी लेखक और तथाकथित विचारकों ने दयानंद को केवल खंडन–मंडन करने वाला व्यक्ति के रूप में ही प्रस्तुत किया। वे यह भूल गए कि दयानन्द यदि स्वदेशी और स्वराज्य के लिए स्वतंत्रता संग्राम के सिपाहियों को प्रेरणा न देते तो अंग्रेजी सत्ता का सूर्य कभी भारत से अस्त न होता। इतिहास की इस सच्चाई को भी इतिहास के पन्नों में अंकित न होती तो कोई यह न मानता कि दयानन्द ही भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम (1857) के प्रेरक क्रान्ति पुरुश थे।

भारत में पढ़ाए जाने वाले किसी भी इतिहास की किताब को उठाकर देख लीजिए, आप को समझ में आ जाएगा कि आर्यसमाज और दयानन्द के प्रति इतिहासकारों में कितनी संकुचित नजरिया है। यही कारण रहा है कि पिछले लगभग दो सौ वर्शों में हिंदू समाज में दयानन्द और आर्यसमाज किसी युगचेतना के विचारक और आंदोलन के रूप में नहीं पहचाने गए। दूसरी तरफ दयानन्द और आर्यसमाज के झंडा–बरदारों ने भी दयानन्द को नहीं समझा। आर्यसमाज को समाज सुधार, राश्ट्र–दर्शन, धर्म, विज्ञान, भाशा, स्वदेशी, स्वराज्य, दलित, पिछड़ा और महिला उत्थान और सुधार तथा शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य करने चाहिए थे, वे नहीं किए गए। यदि कुछ हुए भी, तो इस तरह के नहीं हुए कि जिससे देश–दुनिया में बढ़ रहे पाखंड, अज्ञानता, अशिक्षा, हिंसा, आंतक, साम्प्रदायिकता, शोशण, क्रूरता और चरित्रहीनता को रोकने का एक माहौल बनता। आशाराम, रामपाल और राम रहीम जैसे पाखंडियों को झंडा फहराने के लिए एक भी व्यक्ति का साथ न मिलता।

अब वेद मंत्रों के पाठ आर्यसमाज भवनों के क्रिया–कर्म बन गए और साप्ताहिक सत्संग केवल कोटापूर्ति के कर्मकांड बनकर रह गए हैं। ऐसे में कुछ स्वार्थी और आर्यसमाज विचारों के विरोधी लोगों ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति के लिए एनजीओ खड़ा कर लिया। जिनका कार्य है, केवल यज्ञ के नाम पर धन–सम्पत्ति इक्ट्ठा करना और राजनेताओं को सत्यार्थप्रकाश और महर्शि दयानन्द की तस्वीर भेंट करके धन बटोरना।

भारत विभाजन के लिए जिम्मेदार अंग्रेज न थे, मुस्लिम लीग थी

कृष्णचन्द्र गर्ग

आम तौर पर अपने आपको राष्ट्रवादी कहने वाले हिन्दू भारत विभाजन के लिए अंग्रेजों को दोषी ठहराते हैं। परन्तु सच्चाई यह है कि भारत विभाजन के लिए जिम्मेदार अंग्रेज नहीं, मुस्लिम लीग थी। मुस्लिम लीग भारत के मुसलमानों का एक राजनैतिक दल था। उस समय संयुक्त भारत में मुसलमानों की आबादी 24: के लगभग थी। मुस्लिम लीग के नेता मुहम्मद अली जिन्नाह ने महसूस किया कि भारत के स्वतंत्र होने पर प्रजातन्त्र में मुसलमान शासक नहीं बन सकते। इसलिए उन्हें सत्ता में आने के लिए ऐसा देश चाहिए था जिसमें मुसलमान बहुसंख्या में हों। इसलिए मुस्लिम लीग ने दो राष्ट्र का सिद्धान्त दिया – एक हिन्दू बहुसंख्यक देश और दूसरा मुस्लिम बहसुंख्यक देश। इस सम्बन्ध में जिन्नाह ने 23 मार्च 1940 को लाहौर में हुए मुस्लिम लीग के सम्मेलन में कहा था –

"It is extremely difficult to appreciate why our Hindu friends fail to understand the real nature of Islam and Hinduism. They are not religions in the strict sense of the word, but are, in fact, different and distinct social orders. It is a dream that the Hindus and Muslims can ever evolve a common nationality, and this misconception of one Indian nation has gone far beyond the limits, and is the cause of most of our troubles, and will lead India to destruction, if we fail to revise our notions in time. The Hindus and the Muslims belong to two different religious philosophies, social customs, and literature. They neither intermarry, nor interdine together, and indeed they belong to two different civilizations which are based mainly on conflicting ideas and conceptions. Their aspects on life and of life are different. It is quite clear that Hindus and Musalmans derive their inspipration from different sources of history. They have different epics, their herores are different, and they have different episodes. Very often the hero of one is a foe of the other, and likewise, their victories and defeats overlap. To yoke together two such nations under a single State, one as a numerical minority and the other as a majority, must lead to growing discontent and the final destruction of any fabric that may be so built up for the government of such a State."

अर्थात – "हमारे हिन्दू मित्र इस्लाम और हिन्दुतत्व की वास्तविकता को क्यों नहीं समझते, मुझे इस बात को समझना बेहद मुश्किल लगता है। असल में ये मजहब नहीं हैं, ये दोनों अलग–अलग सामाजिक व्यवस्थाएं हैं। यह एक स्वप्न है कि हिन्दू और मुसलमान कभी सांझी राष्ट्रीयता अपना सकते हैं। एक राष्ट्र की यह गलत धारणा सीमा पार तक खींची जा चुकी है, यही हमारी समस्याओं का कारण है। अगर हमने समय रहते अपनी मान्यताओं को न बदला तो यह धारणा भारत को तबाही की ओर ले जाएगी। हिन्दू और मुसलमान दो अलग–अलग मजहबी विचाराधारओं, सामाजिक रीति रिवाजों और साहित्य से जुड़े हैं। ये आपस में न शादियां करते हैं और न ही इनका आपस का खान–पान का सम्बन्ध है। वास्तव में ये दो अलग–अलग सभ्यताओं से सम्बन्ध रखते हैं जो एक दूसरे की विरोधी हैं। उनके जीवन के लक्ष्य अलग–अलग हैं। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि हिन्दू

और मुसलमान अपनी प्रेरणा अलग–अलग इतिहास से लेते हैं। इनके महाकाव्य, इनके आदर्श पुरुष, इनकी कथा–कहानियां अलग–अलग हैं। आम तौर पर एक का महाबली दूसरे का शत्रु है, एक की जीत होती है तो दूसरे की हार होती है। ऐसी दो कौमों का एक राष्ट्र में बांधना जिनमें से एक अल्पसंख्यक है और दूसरी बहुसंख्यक है, असन्तोष को बढ़ावा देगा और अन्त में उस रचना का विनाश करेगा जो उस राष्ट्र की सरकार बनाने के लिए रचा गया था।''

ऐसे ही भाषण जिन्हा ने और कई अवसरों पर दिए थे।

वायसराय लार्ड विक्टर लिनलिथगो (1936–44) और लार्ड अरचीबाल्ड वेवल (1944–47) ने जिन्नाह को उसके मुँह पर कह दिया था कि वे भारत का विभाजन नहीं करेंगे। उनके बाद आए लार्ड लुईस माउँटबैटन (मार्च 1947–अगस्त 1947) ने विभाजन सिर्फ तब स्वीकार किया जब मुस्लिम लीग ने पहले तो धमकी दी और फिर हिन्दुओं पर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया। जून 1947 में गांधी जी समेत कांग्रेस के नेताओं ने भी भारत का विभाजन स्वीकार कर लिया। गान्धी जी की प्रतिज्ञा कि ''भारत का विभाजन मेरी लाश पर होगा'' भी थोथी निकली क्योंकि मुस्लिम लीग ने भारत के विभाजन के बिना मानना नहीं था और गान्धी जी की भूख हड़ताल से मृत्यु हो जाती।

वास्तव में विभाजन की जड़ें इस्लाम में निहित हैं। इस्लाम के अनुसार शासक मुसलमान ही हो सकते हैं। मौलाना अबदुल कलाम आजाद को राष्ट्रवादी मुसलमान कहना गलत था, वास्तव में उसका लक्ष्य सारे भारत को ही इस्लामी देश बनाना था। जिन्नाह समय के अनुसार प्रजातन्त्र के महत्त्व को समझता था।

16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग ने 'सीधी कार्रवाई ;क्पतमबज ।बजपवदद्ध की घोषणा कर दी और जिन्नाह ने ऐलान कर दिया ''भारत का विभाजन होगा अथवा भारत का विनाश होगा'' ;म्पदपमत उंल ींअम मपजीमत कपअपकमक प्दकपं वत कमेजतवलमक प्दकपंद्ध। यह घोषणा पाकिस्तान बनाने के लिए दबाव डालने के लिए थी। इसका गुप्त एजण्डा हिन्दुओं पर अत्याचार करने का था। बंगाल में मियां हसन शहीद सुहरावर्दी मुख्यमंत्री था। उसके संरक्षण में कलकत्ता और नोआवखली में हिन्दुओं पर मुसलमानों ने अथाह अत्याचार किए। मुस्लिम लीग के नाम पर हजारों मुसलमानों की विशाल सभा होती। भाषणों में हिन्दुओं पर अत्याचार करने की योजनाएं बनाई जातीं। सभा सम्पन्न होने पर हजारों मुसलमान भूखे भेड़ियों की तरह निहत्थे हिन्दुओं पर टूट पड़ते। दस हजार से अधिक हिन्दू मारे गए, पन्द्रह हजार से अधिक जख्मी हुए, सैंकड़ों मकान और दुकानें जलाई गईं।

हिन्दू जो भारत विभाजन के लिए अंग्रेजों को दोषी ठहराते हैं, वे सत्य से और मुसमलानों से डरते हैं। भारत विभाजन का दोष मुसलमानों की अपेक्षा अंग्रेजों पर, जो चले गए हैं, लगाना बहुत आसान है। मुसमलानों के साथ बर्तना बेहद कठिन काम हैं। जिन्नाह हिन्दुओं और मुसमलानों के सम्बन्ध में सत्य कहता था, परन्तु हिन्दुओं का दुर्भाग्य है कि हमारे हिन्दू नेता इस सत्य को स्वीकार न करते थे और आज भी नहीं करते।

नोट :–

1. भारत का विभाजन दो कारणों से बेहद दुखदायक रहा – (एक) विभाजन करने में समझदारी न दिखाई गई जिस कारण से कई लाख निर्दोष लोग मारे गए। (दो) मजहब के आधार पर बंटवारे के बावजूद बड़ी संख्या में मुसलमानों को भारत में रहने दिया गया।
2. एक और महत्त्वपूर्ण बात – अगर भारत का विभाजन न हुआ होता तो आज समूचे अविभाजित भारत पर

0172-4010679
kcg831@yahoo.com

सब्जियां बेचता था, आज आईआईटी, मुम्बई में हूँ

बृजेश सरोज

मैं उतरप्रदेश के प्रतापगढ़ जिले के एक गांव के दलित परिवार में पैदा हुआ। हमारी आर्थिक हालत अच्छी नहीं थी। हम छ भाई बहन व दादी दादी व माता पिता के परिवार के लिये आय बहुत ही कम थी। इसलिये छोटी आयु में ही मुझे दूसरों के खेतों में मजदूरी का काम करने के लिये जाना पड़ता। कभी सब्जियां बेचने का काम भी करता तो कभी शादियों में टैंट लगाने का काम भी करता ।इसके बावजूद मैं अपनी पढ़ाई को गम्भीरता से लेता। घर की आर्थिक हालत को देख कर कई बार पढ़ाई छोड़ने का मन बनाया परन्तु क्योंकि पढ़ाई में अच्छा था इसलिये शिक्षक मार्गदर्शन करते और पढाई नहीं छोड़ने दी। इसी का नतीजा था कि मुझे नवोदय विद्यालय में प्रवेश मिल गया। वहां पढ़ाई को और गम्भीरता से ले सका।

बारवीं के बाद एक संस्था के सहयोग से श्री आंनद कुमार द्वारा गरीब बच्चों के लिये चलाये जा रहे सुपर–30कोंचिंग सैंटर में पहुंच गया और मेरा चयन आईआईटी, मुम्बई में हो गया। जब कि यह मेरे परिवार के लिये खुशी का अवसर था, पर गांव के उच्च जाति के लोग इस से खुश न थे। जब मैं बाहर निकलता तो मुझ पर पत्थर फैंक कर अवना आक्रोश जाहिर करते । मेरे मार्ग दर्शन से मेरे भाई का चयन भी आईआईटी, मे हो गया। हम दोनों की पढ़ाई की फीस कुछ कारपोरेट कम्पनियों ने अदा की।

मैं खुश तो था परन्तु मुझ में यह भावना बार बार आ रही थी कि जिस तरह लोगों ने हम दोनों भाईयों की मदत की, मैं भी गरीब विद्यार्थियों को जीवन में उठने में मदत करूंगां। इसी उदेश्य से मैने अपने कुछ साथियों की मदत से प्रतापगढ़ में समदर्शी फाउंडेशन खोली। अभिनेता आमिर खान भी सहायता के लिये आगे आये और मैने मुम्बई कल्याण में भी संस्था खोली। इन दोनों विद्याालयों में गरीब बच्चों की पढ़ाई का स्तर उंचा किया जाता है ताकि ये बच्चे जवाहर नवोदय विद्यालय और सैनिक स्कूल जैसे प्रतिष्ठत विद्याालय में दाखिला ले सके। मैं समझता हूं कि अपना भविष्य सुरक्षित करने के बाद हमारा यह कर्तव्य बन जाता है कि हम दूसरों का भविष्य सुरक्षित बना कर समाज का कर्जा वापिस करें।

******

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

अभयं मित्रादभयममित्राद भयं ज्ञातादभयं नो परोक्षात
अभयं नक्तमभयं दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु।।

अथर्व वेद के इस मन्त्र में कहा है मित्र से हम अभय हो, शत्रु से अभय हों, परिचत से हम अभय हो, और जो परिचत नहीं हैं उस से भी हम अभय हो, दिन में अभय हो और सब दिशाऐं मेरी मित्र हों। देखने की बात यह है कि पहले प्रभु से प्रार्थना यह की गई है कि हम मित्र से अभय हो और उसके बाद यह कहा गया है कि हम शत्रु से अभय हो । ऐसा इसलिये कि जब मित्र शत्रु बन जाता है तो वह शत्रा से भी अधिक भयानक हा जाता है।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA
D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

आपके विचार कहां से आते हैं?

भारतेन्दु सूद

क्या आप ने कभी सोचा है कि आपके विचार कहां से आते है? विचार मन में पैदा होते हैं। यदि यूं कहें कि मन विचार पैदा करने वाला खेत है या फैक्टरी है, तो गलत नहीं होगा। जैसे खेत में जैसा बीज बोयेंगे, जिस तरह से खाद पानी आदि देंगे, वैसा ही फल बन जाता है, उसी तरह से मन में वैसे ही विचार पैदा होंगे, जैसा हमारा विवेक है, जैसा हमने अपनी आत्मा को बना दिया है, जैसा हमारे सोचने का ढंग बन चुका है। दो व्यक्ति सरकारी दफतर में काम करते थे। दोनों की तरक्की हुई व अफसर बन गये। पहले वयक्ति ने खुशी व्यक्त करते हुये कहा कि अब मैं लोगों की सेवा बेहतर ढंग से करूंगा, किसी का काम नहीं रूकने दूंगा। दूसरे ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुये अपनी पत्नि से कहा, ——जानेमन, दुख के दिन खत्म हुये, एक साल में ही कार और मकान सब का इंतजाम हो जायेगा। दोनों के विचार एक दूसरे से उल्ट है, परन्तु इसका सोर्स है दोनों का विवेक, जिस वातावरण में वे रहे और जैसा उनको आत्मिक ज्ञान के साधन मिले।

इस से एक बात तो स्पष्ट है कि हमारे मन में विचार वैसे ही आयेंगे जैसा हमारा विवेके है। विवेक का सोर्स है आपका ज्ञान, ज्ञान पैदा होता है स्वाध्याय, उपदेश और जो आप परिवार , विद्यालय समाज में देखते हैं या बताया जाता है। इसलिये अच्छे विचारों के लिये आवश्यक है कि अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय किया जाये, आपको ठीक विचार व ज्ञान मिले। उदाहरण के लिये किसी बच्चे को शुरू से ही यह शिक्षा दी जाये कि पाकिस्तानी खराब होते हैं, बड़े होने पर पाकिस्तानियों के बारे में उस के दिल में वैसी भावना रहेगी और जब भी कोई पाकिस्तानी की बात करेगा तो वैसे ही विचार मन में आने प्रारम्भ हो जायेंगे और इन्ही विचारों द्वारा ही आपकी क्रियाऐं प्रभावित होगीं। अच्छे विचार होगें तो हमारी क्रियाऐं अच्छी होंगी व आपके विचार अच्छे नहीं होगें तो क्रियाऐं भी वैसी ही होंगी। , **good thoughts fructify into good actions and bad thoughts fructify into bad actions.** इस से एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि आपका मन आपका मित्र भी बन सकता है और शत्रु भी। इस लिये वेद में कहा है——हे ईश्वर मेरे मन में अच्छे विचार ही आयें। तीन बातें जो अक्सर हमारे विचारों को प्रदुशित करती हैं वे है———बदले की भावना, ईष्या व द्वेश। इन्हें आप क्षमाशील, उदारचित व दूसरों की खुशी में अपनी खुशी समझनें की भावना से नियन्त्रण में कर सकते है। श्री कृष्ण ने गीता में यही कहा है कि आपका मन आपका मित्र व शत्रु दोनो बन सकता है, बात मन में आने वाले विचारों की है, इस लिये अपनी आत्मिक शक्ति द्वारा मन को उपर उठायें। एक व्यक्ति किसी दूसरे द्वारा उकसाने पर बदला लेने के लिये उतारू हो जाता है , वहीं दूसरा व्यक्ति इस नादानी कह कर निकार देता है फर्क सिर्फ मन में पैदा हुये विचारों का है।

एक और चीज जो हमारे विचारों को प्रभावित करती रहती है वे है हमारी पुरानी यादें और अनुभव। उदाहरण के लिये किसी बच्ची के साथ किसी ने दुष्कर्म करने की कोशिश की थी वह हो सकता है अपना बचा हुआ जीवन पुरूष जाति के प्रति घृणा व भय में गुज़ार दें और यह बात उसके विवाहिक जीवन पर भी, अपने पति के साथ सम्बन्धों पर भी प्रभाव डाल सकती है। इस लिये यह भी आवश्यक है कि हम पुराने अनुभवों में कैद न रह कर , नये ढंग से उस को देखें। यह भी तभी सम्भव है यदि हम ईश्वर को न्यायकारी मानकर स्वयं उदारचित बन जायें। हमारी

संध्या में एक मन्त्र आता है जिस में ईश्वर से प्रार्थना की जाती है————हे ईश्वर जो मुझ से अन्जाने में द्वेश करता है या जिस से मैं करता हूं उसे मैं आपके न्याय पर छोंड़ देता हू। यानि की आपने आप को बदले की भावना से यह कह कर मुक्त कर लिया कि इसे मैं ईश्वर के न्याय पर छोड़ देता हूं। यही है मन के विचारों को अच्छा बनाने का साधन।

परन्तु यह बहुत आवश्यक है कि हम अपने मन में गलत व अशुद्व विचारों को आने ही न दें। इस के लिये आवश्यकता है अच्छे लोगों की संगती की व अच्छी पुस्तको के अध्यन की, जिसे की हम सत्संग कहते है। हम अपनी संगती के लिये कैसे लोगों का चुनाव करते हैं, यह भी हमारे अध्यात्मिक ज्ञान पर निर्भर करता है। मेरी बेटी शादी से पहले लगातार मेरे साथ आर्य समाज जाया करती थी, शादी के बाद जब वह दक्षिण के एक शहर में चली गई जहां आर्य समाज नहीं था तो मैने उसे कहा कि अगर आर्य समाज नहीं है तो किसी दूसरे समाज में चले जाया करो, सब जगह कुछ अच्छी बाते होती है। मेरा कहना मानकर उसने ब्रहमकुमारी के वहां जाना प्रारम्भ कर दिया। एक महीने बाद ही उसका फोन आया कि मैं ब्रहमकुमारी के यहां नहीं जाउंगी, मुझे ऐसा लगता है कि मेरा आर्य समाज के माध्यम से लिया ठीक ज्ञान अज्ञान व भ्रमों में न बदल जाये।

हमारे विचार कैसे बनते हैं और इन्हें कौन बनाता है, इसे जानने के लिये मैं आपको एक उदाहरण दे रहां हूं। हम जानते हैं हिन्दू धर्म के स्वार्थी तत्वों ने ऋिषी दयानन्द के प्रचार रोकने के लिये उन पर 17 बार जान लेवे हमले किये। आखरी हमले में उन्हें दूध में जहर दिया गया। उन्होने उस जहर देने वाले जगन्ननाथ को न केवल क्षमा करदिया बल्कि उसे जो बचा हुआ धन था वह भी दे कर भाग जाने को कहा ताकि वह पकड़ा न जाये। इस बात को मेरे एक मित्र ने मनघड़न्त बताया। मैं उसे दोष नहीं देता । जैसा हमारा विवेक है हम वहीं तक सोच सकते हैं। यदि हम यह सोचे कि एक ऋिषी का हमारे जैसे दुनियादारी में व्यस्त व्यक्ति का सोचने का ढंग एक होगा तो हम गलत हैं। एक सच्चा ऋिषी अपने तप और उपासना द्वारा ऐसी स्थिती में पहुंच चुका होता है जहां उसके अन्दर बदले की भावना खत्म हो चुकी होती है वह केवल क्षमा करना ही जानता है।

1. पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये ज़ायेंगे।

न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।

2. विज्ञापन से सम्पादक के विचारों का मिलना, आवश्यक नहीं सम्पादक उस की किसी भी प्रकार जिम्मेवारी नही लेता।

शब्दों का प्रभाव

विनोद स्वरूप, सुन्दरनगर (हि.प्र.)

विनोद स्वरूप

ध्वनि–तरंग षब्दों की हो अथवा संगीत की। मानव जीवन पर इस का गहरा प्रभाव पड़ता है। दैनिक जीवन में इस का प्रभाव प्रायः देखने को मिलता है जब कोई व्यक्ति क्रोध में अपषब्द कहता है तो सुनने वाला व्यक्ति उस से भी अधिक आवेष में आ जाता है और मरने–मारने पर उतारू हो जाता है क्यों कि सुने हुए अपषब्द सीधे मस्तिश्क के कोश्ठ में चले जाते हैं और क्रिया करने लगते हैं।

एक बार महर्शि स्वामी दयानन्द अपने प्रवचन में षब्दों के जाप का महत्त्व समझा रहे थे तथा ईष्वर प्राप्ति के लिए षब्दों की मधुरता बता रहे थे तभी एक व्यक्ति बीच में उठकर बोला–'षब्दों में क्या रखा है? उन्हें रटने से क्या लाभ ?'

स्वामी जी कुछ देर चुप रहे फिर बोले–'तुम मूर्ख और ज़ाहिल ही नहीं अपितु बहुत ही नीच और कमीने भी हो'। यह सुनकर वह व्यक्ति आगबबूला हो गया और क्रोध में बोला–आप इतने बड़े ज्ञानी और विद्वान् हैं, क्या आप को ऐसे षब्द बोलना षोभा देता है ? मुझे आप से ऐसी अपेक्षा न थी। आप के षब्दों से मुझे बहुत दुःख पहुँचा है। स्वामी जी मुस्कुराते हुए बोले–भाई ये तो मात्र षब्द थे। षब्दों में क्या रखा है? मैनें तुम्हें ईंट–पत्थर तो मारे नहीं। सुनने वालों की समझ में आ गया कि जिस तरह अपषब्द क्रोध का कारण बन सकते हैं उसी तरह षब्दों की महिमा से प्रभु की निकटता भी अनुभव कर सकते हैं। अच्छे षब्द या मधुर भाशा हमें आषीर्वाद भी दिला सकते हैं। हमें कटु षब्दों से परहेज कर के सदा मधुर वचन ही बोलने चाहिए।

'वचने कः दरिद्रता' ? बोलने में क्या गरीबी है ? 'ओए, न बोल कर 'आप और जी' बोलने में कंजूसी क्यों ? वाणी द्वारा जो षब्द बोले जाते हैं वह ब्रह्माण्ड में समा जाते हैं और कर्णेंद्रिय द्वारा ग्रहण किये जाते हैं। वेदों को श्रुति कहा जाता है। कहते हैं सृश्टि के आरम्भ में ईष्वरीय ज्ञान को चार ऋशियों ने श्रुति (सुनकर) ही ग्रहण किया था। षब्दों का एक गुण हैं–'विस्फोटक होना,' जैसे आकाष में विद्युत की घोर गर्जना होने पर पृथ्वी पर कम्पन होने लगता है। जिस स्थान पर उक्त गर्जना का अधिक प्रभाव पड़ता है वहाँ यह कम्पन सबसे अधिक होता है। कभी–कभी तो ईमारतों के दरवाजे, खिड़कियाँ, षीषे ध्वनि करने लगते हैं।

इस लिए कहा जाता है कि वाणी द्वारा उच्चारित ष्दों का मानव जीवन में भावनात्मक, षारीरिक और मानसिक रूप से विस्फोटक प्रभाव पड़ता है। हमारे षब्द ही हमारे कर्म होते हैं। हर षब्द को बोलने से पहले उस पर विचार करना अति आवष्यक है, तभी तो कहते हैं–सोच कर, विचार कर बात करें अन्यथा उस का दुश्परिणाम केवल स्वयं को ही नहीं पूरे परिवेष को दुःखी करता है ; संसार में केवल मनुश्य ही ऐसा प्राणी है जिस का ज़हर उसके दान्तों में नहीं षब्दों में होता है। इसी लिए षब्दों का चयन बहुत सोच समझकर करना चाहिए जिस से किसी के मन को ठेस न पहुँचे।

षब्द भी एक प्रकार का भोजन है, षब्द का स्वयं में एक स्वाद है, उसे परोसने से पहले चख लीजिए, यदि स्वयं अच्छा न लगे तो दूसरों को कैसे लग सकता है। कब किस समय कौन सा षब्द परोसना आ जाए तो दुनियां में उस से बढ़िया रसोईया कोई नहीं। वाणी पर संयम रख कर यदि षब्द बोले जाऐंगे तो पराये भी अपने बन सकते हैं। अपषब्द अपनों को भी पराया बना देते हैं। एक लोकोक्ति है, "किसी को गुड़ न दें, कम से कम गुड़ जैसी बात तो कह दें।"

बेमानी है शोहरत की इच्छा यदि जीवन में नेक काम नहीं किए

सीताराम गुप्ता

जीते जी इंसान का इच्छाओं के वशीभूत होना स्वाभाविक है लेकिन कुछ लोग मरने के बाद भी इच्छाओं से मुक्त नहीं हो पाते। वे जीते जी भी शोहरत के भूख रहते हैं और मरने के बाद भी इसमें कमी नहीं आने देना चाहते। लोग अपनी मौत को भी यादगार बनाने में कोई कसर नहीं रख छोड़ना चाहते इसलिए कुछ लोग अपनी वसीयत के रूप में भी अजीबो–ग़रीब क़िस्म की इच्छाएं व्यक्त करना नहीं भूलते। कोई चाहता है उसकी क़ब्र पर उसका ख़ूबसूरत मक़बरा तामीर किया जाए तो कुछ जीते जी जगह का चुनाव कर उसे बनवाना तक शुरू कर देते हैं। जिन लोगों के मक़बरे अथवा समाधियां नहीं बन सकतीं वो चाहते हैं कि उनकी शवयात्रा शानो–शौकत से निकाली जाए जिसे लोग वर्शों तक नहीं शताब्दियों तक याद रखें। चाहे कोई व्यक्ति धनवान हो अथवा निर्धन जीवन में कुछ अच्छा काम किए बिना यदि वो सोचता है कि उसे एक अच्छे व्यक्ति के रूप में याद रखा जाए तो ये असंभव है।

शोहरत हासिल करने के लिए लोग क्या–क्या नहीं करते! आज बहुत से लोग हैं जो अरबों–खरबों कमाते हैं और उस दौलत का एक–आध प्रतिशत दान–दक्षिणा के रूप में व्यय करके प्रशंसा अथवा सम्मान पाना चाहते हैं। ऐसे लोग जो दान–दक्षिणा देते हैं उसका प्रचार अधिक करते नज़र आते हैं। आंज समाज में ऐसे अनेक लोग मिल जाएंगे जो डेढ़–डेढ़ सौ रुपल्ली के पांच–सात कंबल बांटने के आयोजन पर ही लाखों रुपए खर्च कर डालते हैं। अपनी तारीफ करवाने के लिए चापलूसों की पूरी फौज रखते हैं। ऐसे लोग झूठी प्रशंसा करवाकर आत्ममुग्धता से फूले रहते हैं लेकिन लोगों के दिलों में स्थान नहीं बना सकते। जो लोग सेवाभाव व प्यार से लोगों का दिल जीतना जानते हैं वे ही असली नायक होते हैं। उन्हें ही वास्तविक प्रशंसा अथवा शोहरत मिलती है।

बॉलीवुड के अधिकांश बड़े कलाकार इस मर्ज़ से ग्रस्त हैं। कई कलाकार हैं जिन पर अनेक आपराधिक मुकद्दमे दर्ज हैं। न्यायालयों में पैरवी करते समय इनके वकील एक बात ज़रूर कहते हैं और वो ये कि ये समाज के लिए बहुत चैरिटी करते हैं अतः सज़ा में नरमी बरती जाए। यदि आप चैरिटी करते हैं तो क्या आपको अपनी गाड़ियों से लोगों को कुचल कर मारने अथवा कानून को अपने हाथ में लेने का अधिकार मिल जाता है? क्या लोगों के चढ़ांवे से प्राप्त अरबों–खरबों की राशि में से कुछ राशि से स्कूल या कॉलेज खोल देने मात्र से लड़कियों के साथ व्याभिचार करने का अधिकार मिल जाता है? कदापि नहीं।

बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि समाज जिन लोगों को आदर और प्यार देता है वही लोग उनका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से शोशण करने में लगे रहते हैं। अभिनेता हों, खिलाड़ी हों या धर्मगुरू हों सभी जनता के शोशण में लगे हुए हैं। इनमें से हर तीसरा व्यक्ति प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जनता की सेहत के लिए घातक पान मसालों अथवा गुटकों के विज्ञापन करके बेतहाशा कमाई कर रहा है। इनके विज्ञापनों के कारण ही लोग ऐसे अनेक खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ प्रयोग करने को बाध्य होते हैं जो सेहत बनाते नहीं बिगाड़ते हैं। बॉलीवुड के पुराने अभिनेता जिन्हें आज कोई काम नहीं मिल पा रहा है अथवा कर नहीं पाते हैं विभिन्न चैनलों पर आध्यात्मिकता के नाम पर ऊल–जुलूल सामान बेचने और अंधविश्वास फैलाने में जी जान से लगे हुए हैं। लोगों के प्यार का ये सिला देते हैं ये लोग।

ऐसा व्यक्ति जो अपने आर्थिक उत्थान के लिए प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से करोड़ों लोगों की सेहत के साथ खिलवाड़ करने के लिए उत्तरदायी हो कभी नायक नहीं हो सकता चाहे जीते जी अथवा मरने के बाद उसे महिमामंडित करने के कितने ही प्रयास क्यों न किए जाएं। यदि शोहर की कामना है तो नेक काम करने ज़रूरी हैं और जो नेक काम करने में विश्वास रखते हैं वे वास्तव में शोहरत के भूखे ही नहीं होते। लोग सब तरह के लोगों की चर्चा अवश्य करते हैं लेकिन अपने दिल में उन्हीं को स्थान देते हैं जो वास्तव में अपने अच्छे कार्यों से समाज को लाभ पहुंचाते हैं। नेक काम करने से बेशक शोहरत न मिले लेकिन नेक काम करने से व्यक्ति को अच्छा अनुभव होता है। ये अनुभूति शोहरत से बढ़कर होती है। यदि नेक काम के बिना भी शोहरत मिल जाती है तो वो बेमानी है। उससे हमें लाभ नहीं हो सकता। अपने बारे में गलत धारणाएं बन जाएंगी जिससे अहंकार में वृद्धि ही होगी। अतः शोहरत की कामना के बिना नेक काम करना ही श्रेयस्कर होगा, इसमें संदेह नहीं।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Mrs Deepa Arora celebrated her grandson's birthday with our Maharishi dayanand bal ashram children.

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

Attachments area

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

श्री सुबोध बुधवार

श्री यश मोन्गा

श्रीमती शीला कालरा

श्रीमती सुमन सहगल

श्री विरेन्द्र अलंकार

श्री हरि किशोर

श्री हरदियाल महाजन

श्री अमीरचन्द टंडन

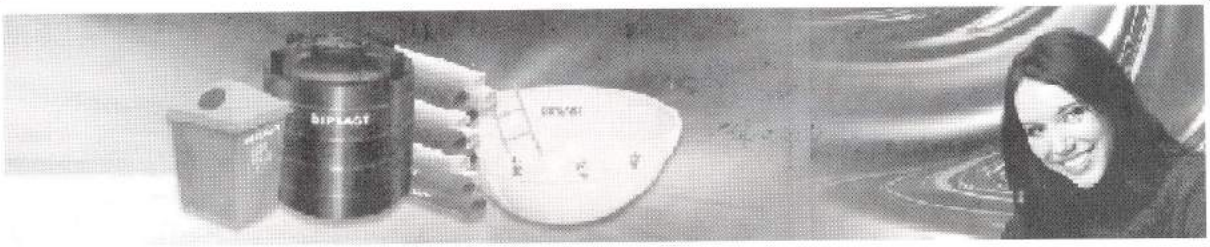

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in